स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स
RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

पिल्टडाउन मैन

पिल्टडाउन मैन को प्रारम्भिक मानव के जीवाश्म के तौर पर प्रस्तुत किया गया था और मानव विकास की एक अहम कड़ी बताया गया था। वास्तव में ये हड्डियों के कुछ टुकड़े थे जिसमें एक खोपड़ी और एक जबड़े का हिस्सा शामिल था। इन्हे इंगलैण्ड में ससेक्स के नज़दीक पिल्टडाउन के गड्ढे से 1912 में प्राप्त किया गया था। अंततः 1953 में इसे एक जालसाज़ी के तौर पर उजागर कर दिया गया। दरअसल यह एक प्राणी का जीवाश्म नहीं था बल्कि इसे ओरैंगोटान के निचले जबड़े और पूरी तरह से विकसित आधुनिक मनुष्य की खोपड़ी को जोड़कर बनाया गया था।

पिल्टडाउन मैन दो कारणों से वैज्ञानिक धोखाधड़ी के सबसे प्रमुख मामलों में से एक है। एक तो यह मानव विकास का मामला था और दूसरा, इस जालसाज़ी को 40 से ज़्यादा बरसों तक प्रामाणिक खोज माना गया था।

चार्ल्स डॉसन का दावा था कि एक खदान कर्मी को खोपड़ी का एक हिस्सा 1908 में मिला था और बाकी टुकड़े उन्होंने और ब्रिटिश संग्रहालय के संरक्षक आर्थर स्मिथ वुडवर्ड ने मिलकर खोजे थे। चार्ल्स डॉसन एक शौकिया ब्रिटिश पुरातत्त्ववेत्ता थे। इन लोगों ने दावा किया कि इन टुकड़ों को जोड़कर जो खोपड़ी बनी है वह कई मायनों में आधुनिक मानव जैसी है; अंतर सिर्फ इतना है कि इसके दिमाग की साइज़ अलग है और इसका वह हिस्सा अलग है जहां खोपड़ी मेरु रज्जू से जुड़ती है। उन्होंने जबड़े की हड्डी का एक टुकड़ा भी प्रस्तुत किया जो किसी आधुनिक चिम्पैंज़ी के समान था। इन सबके आधार पर उनका दावा था कि यह जीवाश्म वनमानुष और इन्सान के बीच की कड़ी है।

कई लोग मानते हैं कि स्वयं डॉसन ने इस करतूत को अंजाम नहीं दिया होगा। दातों और जबड़ों को घिसकर नया आकार देने के लिए विशेषज्ञता की ज़रूरत होती है जो डॉसन के पास नहीं थी। इसके अलावा, हड्डियों को रंगकर जीवाश्म रूपी बनाने के लिए रासायनिक दक्षता की ज़रूरत होती है, वह भी डॉसन के पास नहीं थी।

कुछ लोग मानते हैं कि पूरी कारस्तानी में एक तीसरा व्यक्ति शामिल था। यह तीसरा व्यक्ति था एक पादरी पियरे टाइलहार्ड डी चार्डिन। शायद लोगों का मानना है कि खुदाई पूरी होने से पहले ही उसने इंगलैण्ड छोड़ दिया था। मगर परिस्थितिजन्य साक्ष्य से लगता है कि डी चार्डिन ने ही यह धोखाधड़ी की थी।

बहरहाल, जिसने भी किया हो, मगर पूरे 40 वर्षों तक लोगों की आंखों में धूल झोंकी गई। डॉसन को जियॉलॉजिकल सोसायटी और एंटीक्वेरियन सोसायटी ऑफ लंदन का सदस्य भी चुना गया। पूरी बात का खुलासा वैसे तो उनके जीवन काल में ही होने लगा था मगर वैज्ञानिक समुदाय को यह स्वीकार करते-करते 30 साल लग गए कि यह धोखाधड़ी है।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी